शोध–कार्य की प्रेरणा

संस्कृत भाषा ने आदिकाल से जनमानस को अनुप्राणित और स्पंदित किया है। संस्कृत भाषा को ही प्राचीन भाषा की जननी माना जाता है। भारत की अधिकांश प्रांतीय भाषाओं की जननी भी संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषा को देववाणी, देवभाषा, गीर्वाणी तथा सुरभारती आदि नामों से पुकारा जाता हैं। संस्कृत भाषा को जाने बिना हम अपनी लोक–संस्कृति, धर्म, धार्मिक अनुष्ठानों एवं उत्सव, मेलों, त्योहारों, कर्म–काण्डों आदि को नहीं कर सकते हैं ।

संस्कृत भाषा साहित्य के अत्यधिक समृद्ध होने के कारण इसका अति गहनता से अध्ययन करना तथा सूक्ष्म रूप से जानना ही मेरी हार्दिक और मूल अभिलाषा रही है। संस्कृत भाषा और साहित्य में मेरी विशेष रूचि है। इसीलिए मैंने संस्कृत विषय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की, तथा अपनी परम पूज्यनीय गुरू डॉ0 किरण टण्डन जी से सम्पर्क कर अपनी शोध–कार्य करने की अभिलाषा व्यक्त की। सौम्य ह्रदया डॉ0 किरण टण्डन जी ने मुझे अपने निर्देशन मे शोध–कार्य करने की सहर्ष अनुमति प्रदान की। अतः वे ही मेरी प्रेरणा स्रोत रही है। यही नहीं, महोदया ने आरम्भ से ही मुझे अपना पूर्ण सहयोग दिया और मेरा उचित मार्गदर्शन भी किया है। महोदया ने मुझे **''वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन''** विषय पर शोध–कार्य करने की प्रेरणा दी, यह मेरा सौभाग्य है।

वत्सराज उदयन की कथाओं पर आधारित अनेक नाटक नाटिकाओं की रचना हुई है। उदयन के नाटक और नाटिका संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि तथा उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। इनमें प्रमुख हैं – स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका, तापसवत्सराज। स्वप्नवासवदत्तम, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली को पढ़ने पर मुझे यह रूपक अत्यधिक साहित्यिक तत्वों से परिपूर्ण एवं रूचिकर लगे। इसलिए मैंने इन सभी रूपकों पर शोध कार्य करने का मन बनाया। रूपक, काव्य समाज के दर्पण होते हैं। किसी भी साहित्य पर तत्कालीन समाज संस्कृति की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। नाटक और कथा में अत्यधिक रूचि होने

के कारण मैंने उदयन की कथा को आधार मानकर शोध कार्य करने का निर्णय लिया। निर्देशिका जी के सुझाव से ही मेरी यह अभिलाषा पूर्णतः साकार हो पाई और उनका आर्शीवादात्मक परामर्श मेरा प्रेरणास्रोत रहा है।

शोध कार्य का महत्त्व एवं उद्देश्य

संस्कृत साहित्य प्राचीन काल से अनेक विधाओं से समृद्ध रहा है, जिसमें महाकाव्य खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, व्याकरण, रूपक–उपरूपकों नीति–कथा, ऐतिहासिक काव्य, चम्पू–काव्य आदि रहे हैं । रूपक तथा उपरूपक भी संस्कृत साहित्य के अभिन्न अंग हैं।

संस्कृत काव्य के आचार्यों ने काव्य के दो प्रमुख भेद माने हैं। पहला श्रव्य काव्य, जिसका रसास्वादन सुनकर या पढ़कर किया जाता है। दूसरा दृश्य काव्य जिसका रसास्वादन नेत्रों द्वारा किया जाता है, दृश्य काव्य के दो भेद हैं– रूपक और उपरूपक। रूपक के दस भेदों के अन्तर्गत 'नाटक' एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट भेद है, उपरूपक के अठारह भेदों के अन्तर्गत 'नाटिका' का भी सर्वप्रमुख स्थान है।

संस्कृत साहित्य में कई नाटक और नाटिका वत्सराज उदयन पर आधारित है। वत्सराज उदयन पर आधारित रूपकों में स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका, तापसवत्सराज प्रमुख हैं। इन सभी रूपकों मे वत्सराज उदयन को महान् राजा के रूप में प्रस्तुत किया है। उदयन तथा पद्मावती, रत्नावली या सागरिका, प्रियदर्शिका या आरण्यका के प्रेम का वर्णन है। संस्कृत साहित्य के इन रूपकों, उपरूपकों तथा रूपककारों से वर्तमान पाठकों, सामाजिकों एवं शोधछात्रों को इनका परिचय कराना मेरा मुख्य उद्देश्य है। इन रूपकों में वर्णित राजनीति, कूटनीति, परम्पराओं, रीति–रिवाजों, उत्सवों, मनोरंजन के साधनों, धर्म, संस्कृति, कला, संगीत आदि से आधुनिक पाठकों को अवगत कराना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है। इन रूपकों में वर्णित संवाद–कौशल, पात्रों का चरित्र–चित्रण एवं

चारित्रिक विशेषताएँ, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीति तथा रस, छन्द, अलंकार आदि से आधुनिक पाठकों को अवगत कराना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

कुछ इन्हीं तथ्यों को प्रकाशित करते हुए मैंने यह शोध कार्य किया और यह प्रयास तभी सफल होगा। जब नवीन पाठकों को वत्सराज उदयन के रूपकों में वर्णित शिक्षाओं एवं तथ्यों का कुछ अंश ग्राह्य हो जाए। यह मेरा सौभाग्य है, जो वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों के अध्ययन का अवसर मुझे इस शोध–कार्य द्वारा प्राप्त हुआ । मेरा पूर्ण प्रयास रहेगा कि मैं प्रस्तुत शोध–ग्रन्थ द्वारा वत्सराज उदयन पर आधारित संस्कृत रूपकों से नवीन पाठकों को अवगत कराऊँ ।